



पटना विश्वविद्यालय  
PATNA UNIVERSITY

SEMESTER-III

CC-12

UNIT-1

TOPIC

---

"The American civil war"\* Causes \*

**Vetted By:**

प्रो. (डॉ) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

सम्पर्क: 9835463960

डॉ राजेश कुमार

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

सम्पर्क 9430934482



## अमेरिकी गृह युद्ध (1861-1865)

उत्तरी और दक्षिणी अमेरिकी राज्यों के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक मतभेदों का परिणाम था। इस गृह युद्ध के दौरान ऐसा प्रतीत हुआ कि संयुक्त राज्य अमेरिका अब "संयुक्त" नहीं रह पाएगा। लेकिन अब्राहम लिंकन जैसे राष्ट्रपति ने अपनी कूटनीति एवं सैन्य शक्ति के जरिए अमेरिका को "संयुक्त" रखने में सफलता प्राप्त कर ही ली। दास प्रथा का उन्मूलन हो ही गया। इसके बाद अमेरिका जिस तेजी से शक्ति अर्जित किया, वह अमेरिका को विश्व शक्ति के रूप में परिवर्तित कर दिया। लेकिन आज भी पूरी तरह श्वेत और नीग्रो की बीच दूरियां मौजूद हैं और हाल ही के महीनों में ट्रंप सरकार के समय यह देखने को मिल रही है।

गृह युद्ध( सिविल वार) एक ही राष्ट्र के अंदर संगठित गुटों के बीच में होने वाले युद्ध को कहते हैं। कभी-कभी यह गृह युद्ध ऐसे ही दो देशों के युद्ध को कहा जाता है जो कभी एक ही देश के भाग रहे हो। गृह युद्ध में अक्सर विदेशी ताकतें भी देश को कमजोर पाकर उसमें हस्तक्षेप करने लगती हैं। गृहयुद्ध में लड़ने वाले गुटों का लक्ष्य भी भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। कुछ पूरे देश पर नियंत्रण पाकर अपने मनचाहे व्यवस्था को लागू करना चाहते हैं, कुछ देश की सरकारी नीतियां बदलना चाहते हैं और कुछ देश को विभाजित करके अपने क्षेत्र को स्वतंत्र बनाना चाहते हैं। इस युद्ध के समय दक्षिणी अमेरिकी राज्य अलग होकर एक स्वतंत्र देश के रूप में स्थापित होना चाहते थे परंतु वे सफल नहीं हुए।

अमेरिकी गृह युद्ध के कारणों के विश्लेषण से यह प्रतीत होता है कि अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में ही कहीं ना कहीं गृहयुद्ध के बीज छिपे थे। तो कुछ विद्वान गृहयुद्ध को पूंजीवादी आंदोलन का परिणाम हैं, तो कुछ दास प्रथा को इसका कारण मानते हैं। लेकिन देखा जाए तो उत्तरी और दक्षिणी अमेरिकी राज्यों में विभिन्न मुद्दों को लेकर जो मतभेद था इन्हीं मतभेदों के कारण अमेरिकी दक्षिणी राज्य अलग होकर एक नया संघ के निर्माण के पक्ष में थे जिसमे दास प्रथा का मुद्दा सबसे अहम था।

19वीं शताब्दी में अमेरिका वास्तविक रूप से दो हिस्सों में बटा हुआ था, एक उत्तरी और दूसरा दक्षिणी राज्य। उत्तरी राज्य उद्योग व्यापार और वित्त के प्रधान केंद्र थे। इस क्षेत्र के प्रधान उत्पादन सूती कपड़े, वस्त्र, मशीनें, चमड़े तथा उनका समान इत्यादि था। इसके साथ ही परिवहन उद्योग अपनी पराकाष्ठा पर था। इस प्रकार उत्तरी अमेरिका धीरे-धीरे विकसित होने लगा जबकि दक्षिणी भाग उत्तरी भारत की तरह उतना उन्नत या विकसित नहीं हो सका। उत्तरी और दक्षिणी राज्यों के स्वार्थों में संघर्ष अधिकाधिक स्पष्ट होने लगा। दक्षिण वाले अपने पिछड़ेपन का कारण उत्तर वालों का उत्कर्ष मानते थे। इसके विपरीत उत्तर वालों का या मानना था कि दास प्रथा दक्षिण की खराब स्थिति के लिए जिम्मेदार है। दक्षिण वाले दास प्रथा को अपने अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक मानते थे क्योंकि वहां कृषि कार्य प्रमुख व्यवसाय था और कृषि में काम करने के लिए दक्षिण अफ्रीकी राज्यों से दासों को मंगाते थे, लेकिन उत्तर वाले इसके पक्ष में नहीं थे। यह दोनों के बीच मतभेद का एक बहुत बड़ा कारण माना जाता है।

1830 ईसवी से ही दास प्रथा के प्रश्न को लेकर प्रादेशिक मतभेद तेज होने लगे थे। उत्तर में दास प्रथा विरोधी भावना सशक्त होने लगी। स्वतंत्र भूमि आंदोलन ने भी इस भावना को उत्तेजित किया। 1840 के दशक के मध्य में दास प्रथा का प्रश्न अमेरिकी राजनीति में अन्य प्रश्नों से अधिक महत्वपूर्ण हो गया। अटलांटिक से मिसिसिपी नदी और उसके बाद तक का सारा दक्षिणी क्षेत्र एक अपेक्षाकृत संगठित राजनीतिक इकाई था। जो कपास की खेती और दास प्रथा से संबंधित सभी मूलभूत नीतियों पर एक था। इतना ही नहीं दक्षिण के राजनीतिक नेता, व्यापारी वर्ग, अधिकांश पादरी दास प्रथा के प्रबल समर्थक बन गए थे। यह सिद्ध किया जाने लगा कि इससे नीग्रो जनता को बहुत लाभ है। दक्षिण के प्रचारक इस बात पर बल देने लगे कि दास प्रथा में मालिक और मजदूर के संबंध उत्तर की मजदूरी व्यवस्था की अपेक्षा कहीं अधिक मानवता पूर्ण है, लेकिन वास्तविकता यह थी कि 1830 के बाद दक्षिण के खेत मालिकों ने मजदूरों की देखरेख करने के लिए निरीक्षक बहाल करने लगे। इनका काम दासों से अधिक काम लेने से की थी। इससे दासों की स्थिति और खराब हो गई।

राष्ट्रीय राजनीति में दक्षिण वालों ने कपास और दास व्यवस्था से संबंधित हितों की रक्षा और उसके विस्तार के लिए प्रयास किया। यह एक आवश्यकता समझी जाने लगी क्योंकि कपास की एक फसल उगाने की प्रथा के कारण भूमि की उर्वरता तीव्रता से घटने लगी और नए उर्वर क्षेत्रों की आवश्यकता पड़ने लगी। इसके अलावा राजनीतिक शक्ति की दृष्टि से भी दक्षिण वालों को अतिरिक्त दास्तां समर्थक राज्यों के निर्माण हेतु नए क्षेत्र की आवश्यकता थी। दास प्रथा

विरोधी उत्तर वालों को दक्षिण के दृष्टिकोण से दास प्रथा समर्थकों को संयंत्र का संदेह हुआ और 1830 ईस्वी के दशक में उनका विरोध उग्र हो गया सबसे पहले दास प्रथा विरोधियों ने कांग्रेस से अफ्रीका से दास व्यापार को समाप्त करवाया। तत्पश्चात इसका विरोध अध्यक्ष तरिको द्वारा होता रहा। 1820 के दशक में आंदोलनों का एक नया रूप सामने आया। जो उस समय के गतिशील लोकतांत्रिक आदर्शवाद तथा सभी के लिए सामाजिक न्याय की नई भावना की उपज थी। विलियम लायड गेरिसन अपनी पत्रिका के जरिए दासों को मुक्त करने की वकालत करने लगा। दास प्रथा विरोधी आंदोलन का यह रूप भी था कि दासों को सीमा पार कर उत्तरा कनाडा में भागने की मदद दी जाती थी। 1830 के दशक में दास अपने मालिकों से बचकर तेजी से भागने लगे। दक्षिण वासियों की धारणा थी कि दास प्रथा को सभी प्रदेशों में अपना अस्तित्व बनाए रखने का अधिकार है। उत्तर वासियों ने दावा किया कि इसे कहीं भी बने रहने का अधिकार नहीं है। नए राज्यों के अमेरिका में आने से यह समस्या और तीव्र हो गई। ऐंड्रयू जैक्सन(1829-1837) इस अमेरिकी राष्ट्रपति थे।

इन्हीं परिस्थितियों में

1860 के राष्ट्रपति के चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी का उम्मीदवार अब्राहम लिंकन थे और डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार डग्लस। अब्राहम लिंकन ने घोषणा की कि सभी राष्ट्रीय कानून इस सिद्धांत पर बनना चाहिए कि दास प्रथा को सीमित और अंत में समाप्त किया जा सके। डेमोक्रेटिक दल के आपसी मतभेद तथा रिपब्लिकन दल के दास विरोधी नारों के चलते अब्राहम लिंकन राष्ट्रपति चुने गए।

जैसे ही अब्राहम लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति बने वैसे ही दक्षिणी राज्यों में एक भय पैदा हो गया। इसी समय दक्षिण के 11 राज्यों को मिलाकर एक अलग संघ बनाया गया। अब्राहम लिंकन ने इसे राष्ट्र विरोधी मानते हुए इसे मान्यता देने से इंकार कर दिया तथा संघ के बंधनों में फिर से जुड़ने का निवेदन किया। परंतु दक्षिणी संघ अपनी जगह पर स्थित थे और उन्होंने अपना राष्ट्रपति जेफरसन डेविस को चुन लिया। 12 अप्रैल को गृह युद्ध प्रारंभ हो गया परंतु इस लड़ाई में संघ राज्यों को बहुत सफलता नहीं मिल सकी और अंत में पराजय का मुंह देखना पड़ा। अप्रैल 1865 में कर्नल ली के आत्मसमर्पण के साथ ही युद्ध समाप्त हो गया।

इस तरह अमेरिकी गृह युद्ध, जो दक्षिण और उत्तरी राज्यों के बीच विभिन्न परिस्थितियों और मतभेदों के कारण उत्पन्न हुई थी अब्राहम लिंकन राष्ट्रपति बनने के बाद इस गृह युद्ध को समाप्त किया। कांग्रेस ने संविधान में 13 संशोधन प्रस्तुत करके दासों की स्वतंत्रता पर कानूनी मोहर अंततः लगा दी।